विषय : यहाँ एक नदी बहती थी।

हो गयी गायब

खो गयी सब खूबसूरती,
उजाड़ दी इस धरिणि को।
हैं इमारतें खड़े-खड़े, न
मिलते शुद्ध वायु भी।

थी, बहती नदी यहाँ,
देती थी उन्मेष औ' उमंग।
खो गयी सब खुशियाँ,
छा गयी विष हाय में।

बहती थी पुष्यवति नदी,
कहती थी इसे परी-परी।
धरति माता के खून इस,
नदी हो अब गायब!

काट दिया साथि पेड़ को,
इस उर्वर का श्वसनेंद्रिय को।
मार दिया इस धरिणि को,
प्राण-स्रोत इस भूमी को।

मृदु-सुरभी निर्मल नदी,
पवित्र रंगिणि जीवमयी,
बहती थी यहाँ-यहाँ
रहती थी कहाँ-कहाँ।

हे मानव! क्यूँ कर दिया?
तुम क्यूँ किया इस?
डाल दिया कूड़ा-कचरा
कलंकित हुई इस पवित्र नदी।
बाढ़ में डाल दिया गाँव को,
प्रलय से भर गयी नदी।
बहा दिया इस महानदि
कई जहाज पार करते-करते।

पर एक दिन, हो गयी,
गायब उस नदी।
उस जीवामृतवाहिनि,
खो गयी।

आज, मैं कहता हूँ,
रही थी एक बहती नदी,
यहाँ, थी उस प्यारि
निर्मल नदि।

इस मनुष्य पुत्रों ने
उजाड़ दिया उस नदी को।
उसकी रेत को चुरा लिया
जैसे उसकी निर्मल जीवन भी।

नदीतट संस्कृति को,
उजाड़ दी, खराब की।
जैसे खो गयी उस
निर्मल जल वाहिनि।

सुनो बच्चों! इस किस्सा,
उस मृदु - सुरभि की।
डाल दिया उग्र विष, उस
ओजस्वी नदी में।

सपीलि विष है इस,
दिल में मानव के।
वे मलिन कर दिया
उस नदी को।

मर गयी जानवर प्यास से,
मुर्झायी सब पौधा।
सिर्फ, पूछते है हम-
"हे मानव, क्यूँ कर दिया ये सब?"
फिर भी मैं कहता हूँ
बहती थी यहाँ, एक
निर्मल नदी, पर अब
खो गयी उस नदी।